In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हिं 934

34
हिं.934

समाज विकासमाला

...चंद्र विद्यासागर

हिं
934

साहित्य मण्डल प्रकाशन

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

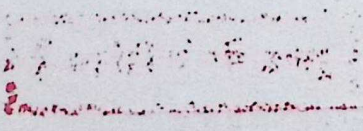

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला : ११४

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

प्रेरणा देनेवाली जीवनी

लेखक
राजाराम जैन

१९३५४
हि० १५५

सम्पादक
यशपाल जैन

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६१
सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९६१
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
भारत मुद्रणालय
शाहदरा-दिल्ली ३२

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि. ९३६

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वह काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों का सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी आसानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus. Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पाठकों से

बंगाल के ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का नाम बहुत से पाठकों ने सुना होगा। वह बड़ी तेज बुद्धि के थे और विद्या के सचमुच सागर ही थे। इसके अलावा उनके जीवन में और भी बहुत से गुण थे।

इस किताब में उन्हींका संक्षिप्त परिचय दिया गया है। वह बहुत ही गरीब घराने में पैदा हुए थे, लेकिन अपनी मेहनत से और अपने गुणों से वह कहीं-से-कहीं पहुंच गये। उनकी गिनती देश के महापुरुषों में होती है।

इस पुस्तक के पढ़ने से पता चलता है कि आदमी अपने बल पर आगे बढ़ता है और दूसरों की सेवा करके ऊंचा स्थान प्राप्त करता है।

हमें आशा है कि इस पुस्तक को पढ़कर पाठकों को अपने जीवन को अच्छा और उपयोगी बनाने के लिए ऊंचे दर्जे की शिक्षा मिलेगी।

—सम्पादक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि. ९३६

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

: १ :

महापुरुष बनने के लिए धनवान होना जरूरी नहीं होता। संसार के जितने भी महापुरुष देखने-सुनने में आते हैं, उन सभी के जीवन को देखकर यह पता चलता है कि वे अधिकतर गरीब घराने में जन्म लेकर आगे बढ़े थे। विद्या का रुपयों-पैसों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता। उसका सम्बन्ध तो विनय, ईमानदारी, मेहनत, अच्छी संगति तथा अच्छे-अच्छे विचारों से होता है। जो व्यक्ति छुटपन से ही स्वावलम्बी तथा सदाचरण वाला होता है, वह निश्चय ही आगे जाकर अपनी उन्नति करता है। कठिनाइयां मनुष्य के भविष्य की कसौटी होती हैं। जो कोई भी उसके ऊपर खरा उतरता है उसके लिए दुनिया में सभी काम सरल हो जाते हैं। हम नीचे ऐसे ही एक व्यक्ति का परिचय दे रहे हैं, जो अपने जीवन की कठिनाइयों से जूझकर आगे बढ़े और जिन्होंने संसार के महापुरुषों की पंक्ति में बैठकर अपना नाम अमर कर दिया।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का नाम बंगाल में बड़े

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आदर के साथ लिया जाता है। बंगाल में यह एक ऐसे महापुरुष पैदा हुए थे, जिन्होंने अपने विचारों और कार्यों से सामाजिक तथा राजनैतिक विषयों पर काफी प्रभाव छोड़ा था।

इनका जन्म बंगाल में मेदिनीपुर जिले के वीरसिंह नामक गांव में सन् १८२० में हुआ था। मृत्यु हुई सन् १८९१ में। इस तरह एक गरीब घराने में जन्म लेकर इन ७१ वर्षों में ईश्वरचन्द्र ने अपने परिश्रम से बड़े-से-बड़े पद पाये और बड़े-से-बड़े सुधार के काम किये। साथ ही इन्होंने ५२ ग्रन्थ भी लिखे। सचमुच इनका विद्या-व्यसन, शिक्षा-संस्कार, सादगी, ईमानदारी, परिश्रम, दयालुता सभी के लिए आदर्श बन गये। अपने इन्हीं गुणों के कारण उनका नाम सदा के लिए अमर हो गया।

ईश्वरचन्द्र के माता-पिता बहुत ही गरीब थे। जब वह गर्भ में थे, इनकी मां पागल हो गईं। उनके पिता तथा बाबा उनकी बीमारी से बड़े दुःखी हुए। पैसे की तंगी होने के कारण घर के बर्तन तथा जो थोड़े-बहुत जेवर थे, उन्हें बेचकर इलाज कराया, लेकिन उनकी तबीयत में सुधार न हुआ। एक दिन एक संन्यासी उनके द्वार पर भीख मांगने आया। उसे देने को एक मुट्ठी अनाज भी घर में न था। इस कारण पिता की आंखों

epal Sanskrit University, Balmeeki.Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

में आंसू आ गये। जब संन्यासी ने उनसे रोने का कारण पूछा तो वह बोले, "स्वामीजी, हमारे ऊपर बड़ी विपदा आ पड़ी है। दुर्भाग्य से आजकल हम लोग भूखों मर रहे हैं। आपको दान देने के लिए हमारे घर में एक मुट्ठी अनाज भी नहीं है। इस हालत में होने पर भी मैं किसी तरह सह लेता, लेकिन मेरी पत्नी गर्भवती होकर पागल हो गई है।" यह कहकर वह जोरों से रोने लगे। संन्यासी ने मां को बुलवाकर परीक्षा की और बोले, "अरे तू तो बड़ा भाग्यवान है, बेटा! तेरी स्त्री बीमारी के कारण पागल नहीं हुई है, बल्कि इसके पेट में जो बच्चा है, वह इतना तेजस्वी है कि उसके प्रभाव के कारण ही इसकी यह हालत हो गई है। घबराने की कोई बात नहीं। यह सब अच्छे के लिए ही हो रहा है।" यह कहकर संन्यासी ने आशीर्वाद दिया और अपने रास्ते चले गये। ईश्वरचन्द्र के पिता ठाकुर-दास उसी समय से अपनी पत्नी की बीमारी से निश्चित हो गये और तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगे।

उन्हीं दिनों की बात है। एक दिन जब इनके घर में दो-तीन दिन तक भोजन न बना तो सभी के प्राण छटपटा गये। ठाकुरदास भी घबराकर अपने घर से

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus. Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बाहर निकले और सड़क पर भटकने लगे। उनका मुंह भूख से मुरझाया हुआ था। जब एक बुढ़िया ने उनकी सूरत देखी तो पूछा, "बेटा, तुम कौन हो? इतने उदास क्यों हो? क्या बात है?" ठाकुरदास ने सारा हाल बुढ़िया को सुना दिया। वह बड़ी दयालु थी। वह चने-लावे की छोटी-सी दूकान करती थी। उसने तुरन्त ठाकुरदास को भरपेट चना-लावा खिलाया और बाजार से गुड़ खरीदकर चना-लावा की एक पोटली

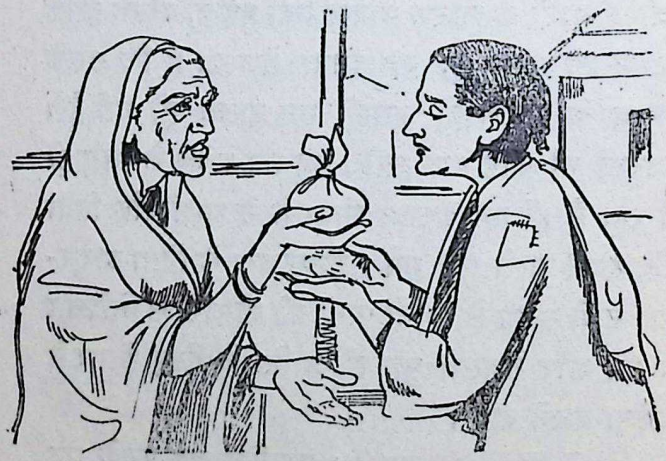

बुढ़िया ने चना-लावा की एक पोटली भी बांध दी

भी बांध दी। कहा, "तुम फौरन दौड़कर घर जाओ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

तुम्हारी पत्नी भूखी बैठी-बैठी रो रही होगी।" ठाकुर-दास उस पोटली को लेकर अपने घर आये और उसे अपनी पत्नी के सामने रखकर सारा किस्सा कह सुनाया।

समय पूरा होने पर बच्चे का जन्म हुआ। बच्चे के बाबा रामजस ने ठाकुरदास को खबर दी कि तुम्हारे यहां बछड़ा (पुत्र) उत्पन्न हुआ है। यह समाचार सुनकर ठाकुरदास बहुत प्रसन्न हुए। हमारे भारत में बछड़ा या बैल शंकरजी की सवारी होने के कारण पूज्य माना जाता है। ईश्वरचन्द्र भी इसी प्रकार अपने कार्यों के कारण पूजनीय बने। इनके पिता ने 'ईश्वर-चन्द्र' नाम इसलिए रखा था कि घोर विपत्ति के दिनों में ईश्वर ने ही इनकी लाज बचाई थी और उन्हें ऐसा पुत्र-रत्न दिया था।

छुटपन में बच्चा अपने माता-पिता से प्रारम्भिक गुणों को सीखता है। वे ही बच्चे के सबसे पहले गुरु बनते हैं। ईश्वरचन्द्र की मां बड़ी धर्मात्मा, दयालु और कमेरी थीं। सफाई और व्यवस्था करने में तो बहुत ही चतुर थीं। इन सब चीजों का असर ईश्वर-चन्द्र के ऊपर बड़ा गहरा पड़ा। उन्हें कहानियां सुनने का भी बड़ा चाव था। उनकी मां रामायण, महाभारत, शिवाजी आदि की कहानियां सुनाया करती थीं। श्रवण-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कुमार की माता-पिता की भक्ति, द्रौपदी-चीर-हरण, विदुरोपाख्यान आदि सुनकर वह प्रायः रो पडते थे। इन कहानियों का ईश्वरचन्द्र पर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि वह अंत समय तक इन गुणों को अपने जीवन में उतारने की कोशिश करते रहे। जब वह बड़े हो गये और विद्वानों की सभा में ऊंचे आसन पर बैठने का अवसर आया, तब एक बार उन्होंने कहा था, "दया, स्नेह, सौजन्य, निष्कपटता, सुबुद्धि, आदि गुणों से पूर्ण अपनी दयामयी और ममतामयी मां की सौम्य मूर्ति, देवी की मूर्ति के समान, मेरे मन-मन्दिर में सदैव ही आलोकित रहेगी।"

पांच वर्ष की अवस्था में वह अपनी गांव की पाठशाला में भरती कर दिये गए। वह शुरू से ही बुद्धिमान और चतुर थे। अपनी चतुराई और परिश्रम से इन्होंने अपने सभी अध्यापकों को खुश कर दिया था। इनके स्कूल के प्रधानाध्यापक ने इनके विषय में लिखा था— "इस स्कूल के इतिहास में आज तक इतना सच्चरित्र, भद्र, बुद्धिमान और परिश्रमी विद्यार्थी नहीं आया, जितना कि ईश्वरचन्द्र बनर्जी है। ऐसे विद्यार्थी को रखने से यह संस्था अपने को गौरवान्वित मानती है।"

ईश्वरचन्द्र लड़ना-झगड़ना तो जानते ही न थे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

ऐसा कोई भी अवसर नहीं आया, जब उन्हें किसी की शिकायत करनी पड़ी हो या उनकी शिकायत किसी ने की हो। वह सहानुभूति देना और सहायता करना अच्छी तरह जानते थे। कक्षा में जो भी कमजोर लड़का होता उसके पास वह स्वयं जाते और हर प्रकार से उसे पढ़ाने के लिए समय देते थे।

ईश्वरचन्द्र इतने बुद्धिमान और मेहनती अपने पिता की कठोरता के कारण बने थे। बड़े होने पर वह अक्सर अपने मित्रों को सुनाया करते थे, "मेरे पिताजी मेरे पढ़ने-लिखने के बारे में बड़े ही कठोर थे। और बातों में वह मुझे जितना प्यार करते थे, पढ़ने-लिखने के विषय में वह उतने ही सख्त हो जाते थे। कई बार वह अपने हाथों से मेरी आंखों में सरसों या मिट्टी का तेल भर देते थे या कभी-कभी मेरी चोटी रस्सी से बांधकर खूंटी से अटका देते थे, ताकि मुझे नींद न आये और मैं ध्यान से पढ़ूं-लिखूं। मुझे पिताजी की यह कठोरता उस समय तो बड़ी खटकती थी, लेकिन आज मैं जो-कुछ भी बन सका, यह उसी कठोरता का फल है।"

अच्छी तरह पढ़ने-लिखने और मेहनत के कारण वह अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम श्रेणी में आते थे। इतना ही नहीं, पहला स्थान भी पाते थे। प्रकृति ने इनके

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

साथ थोड़ा-सा अन्याय किया। वह यह कि वह छुटपन में हकलाते थे। इसीलिए इनके एक अंग्रेज अध्यापक ने एक बार इन्हें दूसरी श्रेणी में पास किया। इसपर ईश्वरचन्द्र बहुत ही रोये और कई दिनों तक खाना नहीं खाया।

पाठशाला की शिक्षा समाप्त होने के बाद इनके पिताजी की इच्छा आगे पढ़ाने की हुई। लेकिन गरीबी के दिनों में वह कैसे सम्भव होता। फिर भी पिताजी ने बड़ा साहस किया और इन्हें कलकत्ता ले गये। ईश्वरचन्द्र का भी पढ़ने-लिखने में इतना अधिक उत्साह था कि वह अपने गांव से पैदल ही अपने पिताजी के साथ कलकत्ता पहुंचे। पैसे तो पास में थे नहीं, अतः कुछ दिन भूखे रहकर दिन गुजारे। उसके बाद बड़ी भाग-दौड़ के बाद पिताजी को दो रुपये महीने की नौकरी मिली। यह दो रुपये की रकम भी उन्हें उस समय बहुत बड़ी लगी। जैसे-तैसे ईश्वरचन्द्र की आगे की पढ़ाई चली। पिताजी की मेहनत और ईमानदारी के कारण उनकी तनख्वाह दो रुपये से बढ़कर दस रुपये हो गई। फिर तो इनका काम कुछ अच्छी तरह से चलने लगा। इस समय तक ईश्वरचन्द्र संस्कृत कालेज के विद्यार्थी बन गये थे।

ईश्वरचन्द्र अपने घर की गरीबी की हालत को

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

अच्छी तरह जानते थे। अतः उन्होंने कुछ काम तलाश कर लिया और इस प्रकार वह अपनी पढ़ाई-लिखाई के खर्च के रुपये स्वयं कमाकर कुछ रुपये अपनी मां को भी भेजने लगे। इनका रहन-सहन तो सादा था ही। सड़क पर लगी म्युनिसिपैलिटी की लालटेन की रोशनी में पढ़ते थे, इसलिए तेल का खर्च भी बच जाता था। भोजन अपने-आप बनाते थे और बर्तन भी स्वयं ही साफ कर लेते थे।

इनकी कक्षा में दो-तीन विद्यार्थी ऐसे भी थे, जो गरीब तो थे ही, साथ ही पढ़ाई में भी बड़े कमजोर थे। ईश्वरचन्द्र ने उन्हें अपने कमरे में रखकर उनकी हर तरह से मदद की। बिना कुछ लिये उन्हें पढ़ा भी दिया। ये विद्यार्थी आगे चलकर सरकारी नौकर हुए और ईश्वरचन्द्र को बड़ी-बड़ी भेंटें देने की कोशिश की, लेकिन ईश्वरचन्द्र ने वे भेंटें स्वीकार नहीं कीं।

: २ :

संस्कृत कालेज की पढ़ाई-लिखाई पूरी हुई। परीक्षा भी हो गई; ईश्वरचन्द्र अव्वल दर्जे में पास हुए। कालेज के प्रिंसिपल एक अंग्रेज थे। उन्होंने ईश्वरचन्द्र को अपने घर बुलाया और स्वयं उनकी परीक्षा ली। उनके उत्तरों से प्रिंसिपल साहब इतने खुश हुए कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उन्होंने अपने कालेज की समिति में एक प्रस्ताव रखा कि इतने बुद्धिमान और होनहार छात्र का कालेज की ओर से सम्मान किया जाय। प्रस्ताव पास हो गया। उसके बाद हजारों विद्यार्थियों और अध्यापकों से घिरे पण्डाल में इन्हें कालेज की ओर से 'विद्यासागर' की उपाधि दी गई और इनका एक चित्र कालेज के भवन में लगा दिया गया। इस प्रकार ईश्वरचन्द्र २१ वर्ष की उम्र में ही 'विद्यासागर' बन गये। आगे चलकर ये ऐसे विद्यासागर बने और इस नाम से इतने अधिक प्रसिद्ध हुए कि लोग इनका असली नाम ही भूल गये।

विद्यासागर की उपाधि मिलने के बाद बंगाल सरकार की कई संस्थाओं ने इनको नौकरी के लिए बुलाया। इन्होंने एक के बाद एक को स्वीकार भी किया, किन्तु अधिक समय तक कहीं भी नहीं टिक सके। इसका कारण यह था कि वह स्वतंत्र विचारों के व्यक्ति थे। अन्याय, दबाव, बेईमानी, कमजोरी आदि उन्हें सहन नहीं होती थी। इसीलिए वह शीघ्र ही इस्तीफा दे देते थे। उस समय कलकत्ता में फोर्ट विलियम कालेज काफी काम कर रहा था। उनके प्रिंसिपल थे एक अंग्रेज। नाम था जार्ज मार्शल। ये आदमियों के बड़े पारखी थे। जब विद्यासागर के इस्तीफे की बात सुनी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तो उन्होंने इन्हें अपने यहां बुलाया और अपने कालेज का प्रोफेसर बनाना चाहा। लेकिन विद्यासागर के अलावा एक दूसरे शास्त्री जी थे, जिन्हें विद्यासागर से पहला मौका मिलना चाहिए था। विद्यासागर ने प्रिंसिपल साहब को उस समय कोई उत्तर नहीं दिया और शीघ्र ही शास्त्रीजी के गांव में जाकर उनसे मिले। आखिर मार्शलसाहब ने दोनों को ही अपने कालेज में प्रोफेसर बना दिया।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर पहले जिस कालेज के विद्यार्थी थे, आगे चलकर उसी कालेज के प्रिंसिपल बने। उस समय अध्यापकों तथा विद्यार्थियों में अनुशासन की शिथिलता काफी आ चुकी थी। न तो अध्यापक समय पर आते थे, न विद्यार्थियों की हाजिरी ही व्यवस्थित होती थी। अध्यापक लोग अक्सर मेज पर पैर फैलाकर कुर्सी पर सोया करते थे। और कुछ लड़के पंखा झलकर उनकी मक्खियां भगाया करते थे। विद्यासागर वैसे तो सभी के प्रति बड़े भद्र और दयालु थे, लेकिन अनुशासन और व्यवस्था के मामलों में वह बड़े ही कठोर थे। उन्हें अध्यापकों और विद्यार्थियों की यह नीति बिल्कुल पसन्द नहीं आई। पर मुश्किल यह थी कि अध्यापकों में एक अध्यापक इनके गुरु रहे थे

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

और दूसरे कई अध्यापक इनके पहले के सहपाठी थे। इनके जो गुरु थे वह इन्हें न्याय पढ़ाते थे और इनपर बड़े कृपालु रहे थे। दुर्भाग्य से यही गुरुजी सबसे अधिक देर से आते थे। विद्यासागर के सामने यह एक बड़ी भारी समस्या थी।

लेकिन उन्होंने एक रास्ता खोज लिया। वह कालेज के खुलने से ठीक पांच मिनट पहले पहुंच जाते

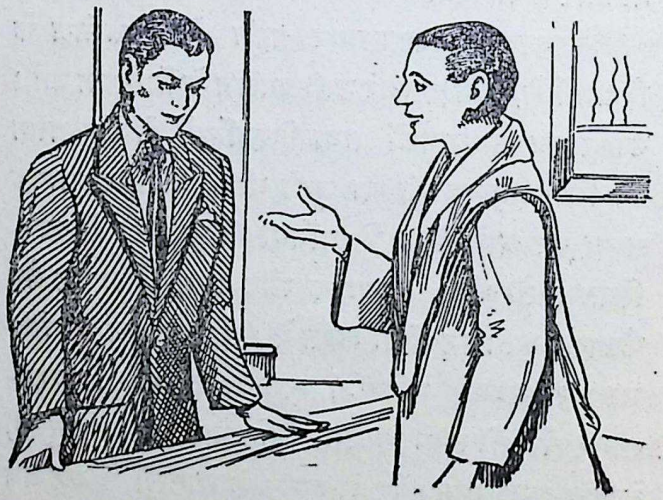

"क्यों, आप अभी आये हैं?"

और उसके बाद जो भी अध्यापक देरी से आता, उसके

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पास पहुंचकर कुछ हंसते हुए पूछते, "क्यों आप अभी आये हैं ?" लेकिन जब गुरुजी आते तो उनसे वह कुछ न बोलते। उन्हें चुपचाप अपनी कक्षा में चला जाने देते। हां, उनके सामने वह दूसरे अध्यापकों को टोक देते थे। गुरुजी ने जब अपने शिष्य की यह नीति समझ ली, तो फिर उन्होंने कभी ढिलाई नहीं की और नियमित रूप से समय पर आने लगे। इस कालेज के विद्यार्थी काफी उद्दण्ड हो चुके थे। एक बार विद्यासागर ने एक नये प्रोफेसर की नियुक्ति की। कक्षा के लड़कों ने उनका अपमान किया और कुछ भला-बुरा कह डाला। जब यह मामला विद्यासागर के पास पहुंचा तो उन्होंने पूरी कक्षा को कालेज से निकाल दिया। कक्षा के विद्यार्थी कालेज की उच्च समिति के पास विद्यासागर की शिकायत लेकर पहुंचे। उस समय लोग अनुमान करने लगे कि विद्यासागर को निकाल दिया जायगा, उनकी जिन्दगी खराब हो जायगी। उन्हें बाजार में तरकारी और गुड़ बेचना पड़ेगा। इस तरह कहकर लड़के उनकी खिल्ली उड़ाने लगे। उच्च समिति ने जब विद्यासागर से इस मामले में पूछताछ की तो उन्होंने उत्तर दिया, "यह मामला प्रिंसिपल से सम्बन्ध रखता है, उच्च समिति से नहीं। फिर भी यदि उच्च समिति इस मामले में

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हस्तक्षेप करती है तो इससे प्रिंसिपल की तौहीन तो होगी ही, साथ ही अध्यापकों में अनियमितता तथा छात्रों में उद्दण्डता की मात्रा बढ़ जायगी। वे आगे चलकर किसी भी अध्यापक को मारपीट सकते हैं।" उच्च समिति ने विद्यासागर के ये शब्द सुने तो उसके सदस्य चुप रह गये।

सारा मामला विद्यासागर के ऊपर छोड़ दिया गया। आखिर लड़कों को माफी मांगनी पड़ी और दयालु विद्यासागर ने फिर से पूरी कक्षा को भरती कर लिया। उसके बाद से फिर कभी इस तरह की दुर्घटना कालेज में सुनने में नहीं आई।

इनके अनुशासन के विषय में एक और घटना बड़ी मजेदार है। जिस समय ये हिन्दू का लेज में अध्यापक थे, उस समय उसके प्रिंसिपल एक अंग्रेज थे, जिनका नाम था 'कार'। वह बड़े ही अभिमानी पुरुष थे। अपने कमरे में सिर्फ एक ही कुर्सी रखते थे अपने बैठने के लिए। दूसरे लोग, खासतौर पर अध्यापक, मिलने आते तो उन्हें खड़े-खड़े ही बातचीत करनी पड़ती थी।

एक बार किसी जरूरी काम से उन्होंने विद्यासागर को अपने घर बुलाया। जिस समय वह घर पहुंचे, कार-साहब कुर्सी पर लेटे-लेटे आराम कर रहे थे। विद्यासागर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

से उन्होने लेटे-ही-लेटे बातचीत की। विद्यासागर को यह बात बहुत बुरी लगी और घर आकर उन्हें इसका पाठ पढ़ाने का उपाय सोचने लगे।

कुछ समय बाद कारसाहब को पुनः विद्यासागर से काम पड़ा और उन्हें अपने घर बुलाया, पर विद्यासागर नहीं गये। आखिर वह स्वयं ही इनके घर आये। जब विद्यासागर ने इन्हें अपने घर आते देखा तो वह पलंग पर लेट गये और लेटे-ही-लेटे उनसे बातचीत की। उन्हें बैठने को भी न कहा। कारसाहब को यह बात बड़ी खटकी। उन्होंने विद्यासागर से कहा, "तुम्हें जरा भी शिष्टाचार नहीं आता। मैं खड़ा हूं और तुम लेटे-लेटे बात कर रहे हो? बैठने के लिए भी नहीं कहा।" विद्यासागर ने फौरन उत्तर दिया, "महाशय, यह सब तो मैं आपके घर से ही सीखकर आया हूं। मैंने सोचा कि शायद आपके यहां ऐसी ही प्रथा होगी। अतः जैसा आपने किया, मैं भी ठीक वैसा ही कर रहा हूं।" कारसाहब यह सुनकर बड़े लज्जित हुए और अपना-सा मुंह लेकर घर आ गये। आगे फिर कभी उन्होंने वैसा नहीं किया। एक बार किसी बात पर विद्यासागर ने कारसाहब से कह दिया था, "तरकारी बेचूंगा, मोदी की दूकान करूंगा, भूखों मरूंगा, पर असम्मान

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वाली नौकरी पर लात मार दूंगा।"

विद्यासागर का अपना निजी पुस्तकालय बड़ा शानदार था। कीमती ग्रन्थों की सुनहरी जिल्दें उन्होंने बंधवाई थीं। एक बार इनके एक धनी मित्र ने पूछा कि इतनी किताबों को जोड़कर रखने से क्या फायदा? इनकी जिल्द सस्ती और मामूली भी बंधवाई जा सकती थी। यही पैसा यदि अपने शरीर के आराम में लगाया जाता तो जिन्दगी चैन से कटती।" इन मित्र के गले में एक शाल पड़ा था। उसकी ओर इशारा करके विद्यासागर ने पूछा, "यह शाल कितने का है।" मित्र ने बताया कि पांचसौ रुपये में अभी-अभी खरीदा है। विद्यासागर ने कहा, "दस रुपये की शाल भी तो इसके स्थान में काम दे सकती थी, फिर पांचसौ का खर्च क्यों? आप सरस्वती (विद्या) को ठुकराकर मौज के साधन जुटाते हैं और मैं मोटी सस्ती खद्दर की धोती-चद्दर पहन-ओढ़कर सरस्वती की पूजा करता हूं। बस आपमें और मुझमें यही अन्तर है।" धनी मित्र यह सुनकर बड़ा शर्मिन्दा हुआ और आगे से फिर कभी उसने बिना सोचे-विचारे ऐसी बात मुंह से नहीं निकाली।

विद्यासागर की विद्वत्ता की धाक बंगाल की सरकार भी मानने लगी थी। अंग्रेजों के समय में आई०

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सी० एस० की परीक्षा सबसे बड़ी मानी जाती थी। वह इंगलैंड में होती थी। बड़ी कठिन थी। उसका परीक्षक होना तो उससे भी कठिन था। विद्यासागर को उसका परीक्षक बनाया गया और इंगलैंड से उसकी कापियां जंचने के लिए इनके पास आती थीं। कई अंग्रेज इनके पास बड़ी-बड़ी सिफारिशें तथा रिश्वतें लेकर आते थे। लेकिन विद्यासागर कभी लालच में नहीं पड़े। एक बार एक अंग्रेज आया और फलों की डाली साथ में लाया। वह आई० सी० एस० की परीक्षा में बैठा था और विद्यासागर के पास जो पर्चा था वही उसका खराब होगया था। विद्यासागर ने बड़े क्रोध से उसे वापस कर दिया और कहा, "जितनी बार आप यहां आयेंगे, उतने ही आपके नम्बर काट लूंगा।" उसके बाद वह या और कोई अंग्रेज उनके पास सिफारिश करने और नंबर बढ़वाने नहीं आया।

बंगाल के गवर्नर, जिनका नाम हालिडे था, इनका बड़ा सम्मान करते थे और इनसे संस्कृत पढ़ा करते थे। विद्यासागर ने अपनी सुविधानुसार बृहस्पति का दिन उनके यहां जाकर पढ़ाने के लिए निश्चित किया। गवर्नर के घर पर भी वह धोती, चादर तथा खड़ाऊं पहनकर जाते थे। यह देख गवर्नर ने उनसे कहा कि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वह राजभवन में सूट पहनकर आया करें। विद्यासागर ने कोट-पतलून कभी नहीं पहने थे और उनका पहनना भी अपनी शान और सादगी के खिलाफ समझते थे। फिर भी गवर्नरसाहब के बहुत कहने पर सूट बनवा लिया और पहनकर जाने लगे। चौथे दिन इन्होंने गवर्नर से कहा, "आज आपसे मेरी यह आखिरी मुलाकात होगी।" गवर्नर ने अचरज से पूछा, "क्यों पण्डितजी, मेरा क्या कसूर है, जो अब आपसे मुलाकात नहीं होगी?" विद्यासागर ने हँसते हुए कहा, "कैदियों की भांति ऐसी कष्ट देनेवाली पोशाक पहनकर व स्वांग बनाकर आपसे मिलने आना मेरे लिए नामुमकिन है।" गवर्नर ने थोड़ी देर सोचकर कहा, "पण्डितजी, जिस पोशाक को पहनकर आने में आपको सुविधा हो, उसीको पहनकर आया कीजिये। लेकिन आप मेरे यहां आना न छोड़िये।" विद्यासागर ने मुस्कराकर उनकी बात मान ली।

: ३ :

जिस समय विद्यासागर संस्कृत कालेज के प्रिंसिपल थे, उन्हें स्कूलों का इंस्पेक्टर भी बना दिया गया। उस जमाने में यह पद बहुत ही ऊंचा माना जाता था।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उस पद पर रहकर विद्यासागर ने जनता की बड़ी सेवा की। कई नये-नये स्कूल खोले और जीवन में नैतिकता पैदा करनेवाली किताबें यहां के पाठ्यक्रम में रखीं। अपनी सेवावृत्ति के कारण उन्होंने बे-पढ़े बच्चे, युवकों तथा बूढ़ों के हृदय में कैसा स्थान बना लिया था, इसका एक उदाहरण यहां दिया जाता है।

विद्यासागर इंस्पेक्टर के रूप में एक बार मुआयना करने के लिए हुगली जिले के एक गांव में गये। जब उस गांव के लोगों को विद्यासागर के आने का पता लगा तो बालक, जवान और बूढ़े सभी उनके दर्शन के लिए बड़े उत्साह के साथ तैयारी करने लगे। दस बजने के पहले ही स्कूल के आसपास के घरों की औरतें जमा होने लगीं। घरों की खिड़कियों में, अटारियों के छज्जों पर, छतों पर वे सभी विद्यासागर के स्वागत के लिए खड़ी होगईं। विद्यासागर के आने में कुछ देरी होगई। गरमी के दिन थे। धूप के कारण सभी परेशान थे, लेकिन कुछ ही देर बाद विद्यासागर के आने का शोर मचा। चारों ओर उत्साह छा गया। स्कूल के विद्यार्थी अपने-अपने स्थानों पर बैठने लगे और स्कूल के कार्यकर्ता उनके स्वागत के लिए आगे बढ़े, औरतें भी अपने-अपने स्थान से ही उनके स्वागत के लिए फूल और लावा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

बरसाने के लिए तैयार होने लगीं। विद्यासागर आये और रास्ते से निकलने लगे, लेकिन औरतों में से कोई भी उन्हें पहचान न पाई। वे तो कोट-पतलूनधारी विद्यासागर की कल्पना कर रही थीं, जबकि वह धोती,

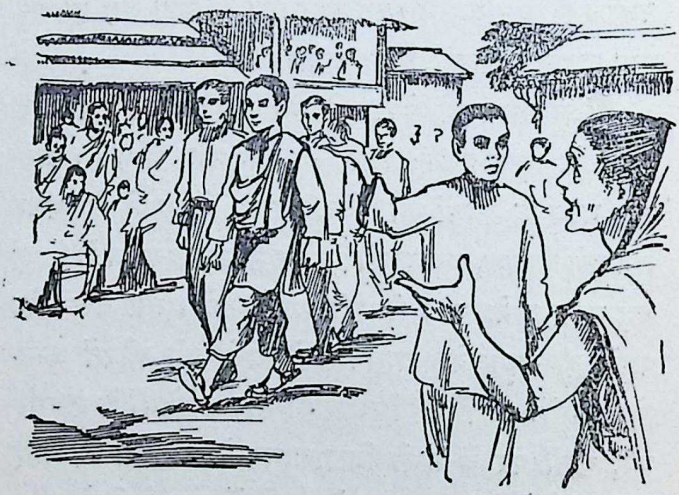

"यह मोटी धोती, मोटी चद्दर और खड़ाऊं पहने हुए विद्यासागर हैं।"

चद्दर और खड़ाऊं पहने हुए थे। एक बूढ़ी औरत ने आगे बढ़कर विद्यासागर के एक साथी से पूछा, "विद्यासागर नहीं आये?" उसने विद्यासागर की ओर इशारा करते हुए कहा, "वह रहे!" बुढ़िया आंखें फाड़-फाड़कर उनको देखती रही और फिर बोली, "यही जो मोटी धोती,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मोटी चद्दर और खड़ाऊं पहने हुए हैं, विद्यासागर हैं ? उन्हींको देखने के लिए लोग इतनी कड़ी धूप सहते रहे ? इनके पास न बग्घी है, न मोटर है और न बाबुओं जैसा रोब है। सचमुच विद्यासागर हमारा है, वह हमारा नेता है।"

ईश्वरचन्द्र अपनी मां के बड़े भक्त थे। एक बार जब वह कालेज में अध्यापक थे, इनके भाई की शादी हुई। मां ने इस मौके पर विद्यासागर को बुलाया। विद्यासागर ने अपने प्रिंसिपल से छुट्टी मांगी, लेकिन उन्होंने छुट्टी नामंजूर कर दी। इस पर विद्यासागर को गुस्सा आगया। उन्होंने इस्तीफा लिखकर प्रिंसिपल को दे दिया और बोले, "मैं नौकरी छोड़ सकता हूं, लेकिन मां की आज्ञा नहीं टाल सकता।" आखिर छुट्टी मिल गई और विद्यासागर अपने घर की ओर रवाना हुए। घर जाते समय रास्ते में दामोदर नदी पार करनी पड़ती थी। संयोग से उस समय पानी बरस चुका था और नदी में काफी बाढ़ थी। नाववाला कोई मिला नहीं। अतः चढ़ हुई नदी में वह कूद पड़े और तैरकर उस पार पहुंचे। अच्छे-अच्छे मल्लाह भी जिसे पार करने में डरते थे, उसे विद्यासार ने सहज में पार कर लिया और शाम को घर पहुंच गये। पर इनके पहुंचने के पहले

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

ही बारात रवाना हो चुकी थी और उनकी मां बिना कुछ खाये-पिये दरवाजे पर आंसू बहाती हुई अपने बेटे की राह देख रही थी। जब विद्यासागर पहुंचे तो उन्होंने मां के पैर छुए, मां ने बेटे को प्यार से गोद में बैठा लिया और देरी का कारण पूछा। विद्यासागर ने विषय बदलकर बात टाल दी। यदि वह तैरकर आने की बात मां से कह देते तो मां नाराज होती। भाई की बरात लौटने पर विद्यासागर फिर कलकत्ता वापस आ गये।

विद्यासागर अपने जीवन में सदा दयालु रहे। एक बार उन्होंने किसी आदमी को सड़क पर सिसकियां भरते देखा। वह उसके पास पहुंचे और उससे रोने का कारण पूछा। उसने कहा कि मेरे ऊपर एक धनी साहूकार ने तेईससौ रुपये का कर्ज निकालकर नालिश कर दी है। मेरे पास चुकाने को एक कौड़ी भी नहीं है। कल मेरा घर तथा गृहस्थी का सब सामान कुर्क होकर नीलाम कर दिया जायगा। तब मेरे बच्चों का क्या होगा! मेरी स्त्री १५ दिन से बीमार पड़ी है। उसकी दवा का भी कोई इन्तजाम नहीं है। मकान बिक जाने से तो उसे बैठने का भी ठौर न रहेगा।

ईश्वरचन्द्र ने बड़ी सहानुभूति के साथ उसका पूरा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नाम तथा घर का पता पूछ लिया और चुपचाप अपने घर वापस चले आये। दूसरे दिन ठीक १० बजे अदालत पहुंचकर उन्होंने उसी आदमी के नाम से तेईससौ रुपये अदालत में जमा करा दिये और उसके घर जाकर खिड़की में से दो सौ के नोट फेंककर अपने घर चले आये। इधर वह आदमी कुर्की करने वालों की राह देख रहा था। जब उस दिन और उसके कई दिन बाद भी कोई न आया तो उसे ध्यान आया कि विद्यासागर ने इस विपदा में उसका साथ दिया होगा। पता लगाने पर बात ठीक निकली।

एक बार एक दरोगा भी विपत्ति में पड़ा हुआ था। उस समय स्वयं विद्यासागर की हालत अच्छी न थी। फिर भी जब दरोगा उनके पास सहायता के लिए आया तो उन्होंने कहा, "तुम घबराते क्यों हो ? पहले मेरे साथ भोजन करो, आराम करो, बाद में मैं तुम्हारा काम कर दूंगा।" और उन्होंने इन्तजाम करके दरोगा को तुरन्त सातसौ रुपये दे दिये।

जिन दिनों वह कलकत्ता में पढ़ते थे, एक दिन एक चोर इनके घर में आया और चुपचाप इधर-उधर सामान टटोलने लगा। उस समय विद्यासागर लेटे हुए थे। दीपक में तेल न होने के कारण वह बुझ गया था।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

घर में अंधेरा था। चोर यही समझ रहा था कि लोग सो रहे हैं। लेकिन विद्यासागर जाग रहे थे। जब बहुत देर हो गई और चोर के हाथ कुछ भी न लगा तो विद्यासागर को हँसी आ गई। वह बोले, "भाई क्या खोज रहे हो? क्या चाहिए तुम्हें? यहां तो मुझे दिन की रोशनी में भी कुछ नहीं मिलता और तुम रात में खोजने के लिए आये हो? यदि तुम्हें कुछ मिल गया हो तो ठीक; नहीं तो अब आओ, आराम कर लो, काफी थक गये होंगे। सुबह खाना खाकर चले जाना।" यह सुनकर चोर चुपचाप वहां से खिसक गया।

विद्यासागर जब भी बीमार पड़ते थे, खरमाताड़ा नामक एकान्त स्थान में आराम करने चले जाते थे। एक बार जब वह अपनी बीमारी के दिनों में आराम कर रहे थे, एक मेहतर उनके पास रोता हुआ आया और बोला, "महाराज, मेरी स्त्री को कई दिनों से बड़े जोर का बुखार चढ़ा है, वह छटपटा रही है। गरीब आदमी हूं। आपकी सहायता के बिना वह बच नहीं सकती।" उसकी आवाज सुनकर विद्यासागर का दिल तड़प उठा। खुद बीमार तथा कमजोर होते हुए भी उन्होंने उसी समय कपड़े पहने और अपनी दवाइयों का सन्दूक उठाकर उसके साथ चल दिये। उसके घर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वह दिनभर रहे और जब तक स्त्री की हालत अच्छी न होगई, वहां से न उठे। बाद में उसे दूध और फल के लिए कुछ रुपये देकर अपने घर वापस आये।

इनकी मां भी कम दयालु न थीं। एक बार जाड़े के दिनों में विद्यासागर ने अपनी मां को गरम कपड़ों का एक बढ़िया बिस्तर तैयार कराकर भेजा। मां के घर के पास ही एक गरीब विधवा रहती थी। उसके बच्चे भी थे। वह दिनभर मेहनत-मजदूरी करके अपना तथा बच्चों का पेट पालती थी। उसके पास ओढ़ने के कपड़े न थे। मां ने वह नया बिस्तर उसे दे दिया। जब विद्यासागर को यह मालूम पड़ा तो बहुत खुश हुए। उन्होंने बारह बिस्तर बनवाकर भेजे और कहलवा भी दिया कि इन्हें गरीबों को बांट दो। जरूरत पड़ेगी तो और भिजवा दूंगा।

विद्यासागर को घमण्ड तो छू भी नहीं गया था। एक बार एक सज्जन ने विद्यासागर से मिलने के लिए पत्र लिखकर उनकी सुविधानुसार तारीख तथा समय पूछा। विद्यासागर ने उत्तर दे दिया। निश्चित समय पर विद्यासागर स्वयं ही उन्हें लेने स्टेशन पर पहुंच गये। आनेवाले महाशय तो पूरे बाबू थे। विद्यासागर को भी वह अपने जैसा ही समझते थे। जब गाड़ी आई तो

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वह नीचे उतरकर कुली की तलाश करने लगे। स्टेशन पर विद्यासागर के अलावा और कोई कुली जैसा उन्हें दिखाई न दिया। अतः उन्हीं से सामान ले चलने के लिए कहा। विद्यासागर ने चुपचाप उनकी पेटी को

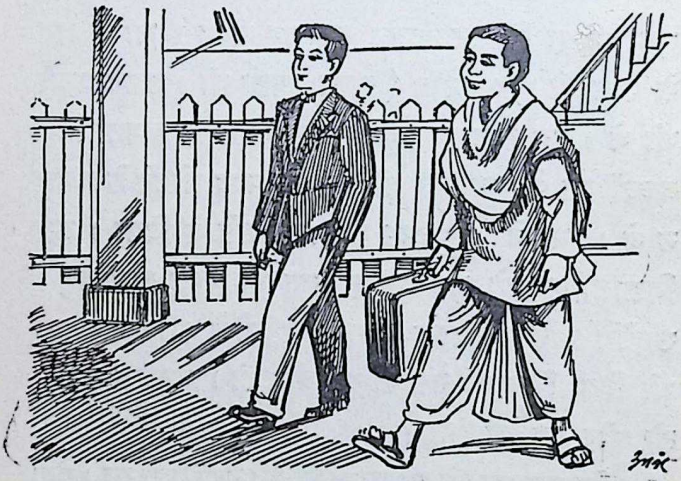

विद्यासागर चुपचाप पेटी उठाकर चल दिये।

उठाया और चल दिये। विद्यासागर ने उन्हें पहचान लिया। चलते-चलते जब घर आ गया तो वह उन्हें पैसा देने लगे। विद्यासागर ने पैसे नहीं लिये। उन सज्जन ने गुस्से में आकर कहा, "लेना हो तो ले ले,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

एक आना ही मिलेगा, ज्यादा नहीं।" यह कहकर उन्होंने इकन्नी धरती पर फेंक दी। विद्यासागर ने यह इकन्नी उठाकर उनकी पेटी पर रख दी। और कहा, "मैं तो इसी घर में रहता हूं।" इसपर वह महाशय कुछ ढीले पड़े और बोले, "अच्छा, अन्दर जाकर विद्यासागरजी से कहो कि मैं आगया हूं। विद्यासागर ने कहा, "आप अन्दर चलिये। वहीं मुलाकात हो जायगी" यह कहकर उन्होंने फिर से उनकी पेटी उठा ली और उन्हें अन्दर लिवा लाये। अन्दर आकर बोले, "जी, मैं ही विद्यासागर हूं। आप हारे-थके होंगे, स्नान करके भोजन कीजिये।" उन सज्जन को काटो तो खून नहीं। वह पैरों पर गिर पड़े और उनसे क्षमा मांगने लगे।

रामकृष्ण परमहंस विद्यासागर के गुणों से बड़े प्रभावित थे। एक बार वह विद्यासागर के पास आये और बोले, "नाला, खोरा, गढ़ैया, नदी आदि पार करके अब मैं विद्यासागर के पास पहुंचा हूं। यह सुन विद्यासागर ने विनोद में कहा, "अब तो आप आ ही गये। अब आपको खारा पानी पीने को मिलेगा। उसके सिवा यहां और है क्या ?" परमहंस ने उत्तर दिया, "सागर केवल खारा ही नहीं होता। दूध, दही, घी, शहद के भी तो सागर होते हैं। आप तो अविद्या के सागर नहीं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हैं, विद्या के सागर हैं। आपमें तो रत्न ही मिलते हैं। आगया हूं तो रत्न ही लूंगा, खारा पानी क्यों लूं ?" दोनों महात्माओं की इस तरह बातचीत होते-होते दोनों की आंखों से आनन्द के आंसू झरने लगे।

विद्यासागर का जीवन महान था। एक गरीब घराने में जन्म लिया, गरीबी में पले, पर अपनी मेहनत से कहीं-से-कहीं पहुंच गये।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

---

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmen

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी ज़मीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१ बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५ कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. ऊन की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कर्मों का विपाक
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारुन-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी : भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी : भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. सूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानियां
७६. सोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुआ सवेरा
७९. धीरबल की बातें
८०. मन के जीते जीत
८१. मुरब्बी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. प्रानबान के रखवारे
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश यों आगे बढ़ेगा
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. नन्हा अबाबील
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत वेमन्ना
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि अगस्त्य
१००. दानवीर कर्ण
१०१. शेख सादी
१०२. गोदावरी
१०३ कुम्हार की बेटी
१०४. नर्मदा
१०५. शंकराचार्य
१०६. अमरनाथ
१०७. गहारानी अहिल्याबाई
१०८. पढ़ेंगे-लिखेंगे ..
१०९. कोणार्क
११०. मंगू भैया

मूल्य : प्रत्येक [illegible]

११४

९२

९८

सैंतीस नये

सस्ता साहित्य मण्डल

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand